REVIEW OF RESEARCH

ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 3.8014 (UIF)
VOLUME - 6 | ISSUE - 10 | JULY - 2017

सेरहदा : इतिहास की दृष्टि में

Devender Singh
Research Scholar , Dept. of A.I.H., C & A, Kurukshetra University, Kurukshetra .

प्रस्तावना :

हरियाणा भारतीय संस्कृति और आध्यात्मिक चिन्तन का प्राचीनतम केन्द्र रहा है। इसी भू-भाग में प्राचीन सभ्यता जन्मी, फली-फूली और देशभर में फैली । यह स्थान इतिहास, प्राचीन कथाएं, आख्यान और पुरातात्विक अवशेष संजोए है। यह स्थान कुरुक्षेत्र जैसी पवित्र भूमि पर गीता के उपदेश और महाभारत के युगान्तकारी युद्ध के कारण विश्व प्रसिद्ध है।

इसी पूज्य भूमि पर सेरहदा नामक प्राचीन तीर्थ स्थल महत्त्वपूर्ण स्थान रखता हैं इस तीर्थ स्थल का महत्त्व विश्व सम्मुख महाभारत जैसे महाकाव्य तथा पुरातात्विक दृष्टिकोण से प्रत्यक्ष होता है। पुराणों में भी इस तीर्थ स्थल का स्पष्ट उल्लेख मिलता है।

भौगोलिक स्थिति :

सेरहदा नामक गांव हरियाणा राज्य के जिला कैथल में राजौन्द तहसील के अन्तर्गत आता है तथा यह कुरुक्षेत्र से राजौन्द मुख्य मार्ग पर राजौन्द से 5 कि०मी० उत्तर दिशा की तरफ स्थित है।

नब्बे के दशक से यह विधानसभा क्षेत्र भी था जो बाद में पाई तथा वर्तमान में कलायत विधानसभा क्षेत्र के अन्तर्गत आता है। सेरहदा से लगभग छः किलोमीटर पूर्व की तरफ सैन्धव सभ्यताकालीन चौतग नदी गुजरती थी जो वर्तमान में अस्तीत्व में नहीं है। इस क्षेत्र में गेहूं, चावल, जौ, सरसों, कपास, गन्ना, चना आदि फसलें होती है तथा सिंचाई के स्त्रोत के रूप में मुख्यतः नलकूप तथा छोटी कृत्रिम नहरें जो पश्चिमी-यमुना से निकलती है, का प्रयोग किया जाता है । यहां का तापमान गर्मी में 42°सै० तथा सर्दियों में 14°सै० तक चला जाता है।

आध्यात्मिक महत्त्व :

सेरहदा गांव के लोगों की मान्यतानुसर इस गांव का नाम 'सरहद' नाम से उत्कीर्ण हुआ है। मान्यतानुसार यह स्थान महाभारत काल में कौरवों और पाण्डवों की सरहद थी तथा यह वही स्थान है जहां पर महाभारत का युद्ध हुआ था और जब युद्ध के दौरान यहां पर भारी रक्तपात हुआ तो मृत व्यक्तियों की अस्थियों के विसर्जन की समस्या उत्पन्न हुई तो भगवान श्री कृष्ण ने इसी स्थान पर स्थित तालाब में दाह-संस्कार के बाद अस्थि विसर्जन करने को कहा तथा मोक्ष प्राप्ति का वरदान दिया । वर्तमान समय में भी इस स्थान के निवासी किसी भी व्यक्ति के दाह-संस्कार के बाद अस्थि विसर्जन गांव में स्थित "बड़े वाला" नामक तालाब में करते है।

इस स्थान का सम्बन्ध महाभारत में वर्णित एक मुख्य घटनाक्रम से भी जुड़ा हुआ है। महाबली भीम के पुत्र घटोत्कच के विषय में हम सब जानते है । घटोत्कच का विवाह दैत्यराज मुर की पुत्री मौरवी से हुआ जिसे कामकटक तथा अहिल्यावती नाम से भी जाना जाता है। घटोत्कच तथा मौरवी को पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई तथा इसका नाम बर्बरीक रखा गया जिसको वर्तमान समय में "खाटू श्याम" के नाम से भी जाना जाता है। वीर बर्बरीक ने विजय नामक ब्राह्मण का शिष्य बनकर उनका यज्ञ सम्पूर्ण करवाने के लिए राक्षसों से सुरक्षित किया तथा इस कार्य से प्रसन्न होकर भगवान् शिव ने इनको तीन बाण प्रदान किये, जिनसे संसार पर विजय प्राप्त की जा सकती थी ।

जब महाभारत का युद्ध शुरू हुआ तब बर्बरीक ने हारने वाले पक्ष का साथ देने का वचन अपनी माता के सम्मुख किया। भगवान श्री कृष्ण ने बर्बरीक की परीक्षा ली तथा पेड़ के सारे पत्तों को भेदने को कहा तथा एक पता अपने पांव के नीचे छिपा लिया। बर्बरीक ने सारे पतों को भेद दिया तथा जब श्रीकृष्ण ने पांव के नीचे दबे पते को देखा तो वह भी बिधा हुआ मिला तब श्री कृष्ण को विश्वास हुआ कि बर्बरीक के रहते युद्ध में पाण्डवों की विजय संभव नहीं है। इसलिए बर्बरीक को अपना शीश दान स्वरूप देने को कहा जिसे बर्बरीक ने सहर्ष स्वीकार कर लिया लेकिन महाभारत का युद्ध देखने की इच्छा प्रकट की तब श्रीकृष्ण ने उनको दो वरदान दिए । पहला, यह की उनका शीश शरीर से अलग होकर भी जीवित रहेगा तथा महाभारत युद्ध का साक्षी बनेगा तथा दूसरा यह की बर्बरीक को उनके प्रिय नाम श्रीश्याम के नाम से पूजा जाएगा।

सेरहदा नामक स्थान पर ही बर्बरीक के शीश को स्तम्भ पर स्थापित किया गया ताकि महाभारत का युद्ध देख सके। यह स्थान कुरुक्षेत्र के 48 कोस (1 कोस = 2.5 कि०मी० लगभग) के मध्य का स्थान है। जो आधुनिक हरियाणा के कुरुक्षेत्र, करनाल, कैथल, जींद, पानीपत सहित पांच जिलों में फैला है। महाभारत में, उत्तर-पूर्व में रन्तुक यक्ष (पिपली के पास), पश्चिम में अरन्तुक (गांव बेहर, जिला कैथल के पास), दक्षिण-पश्चिम में रामहद यक्ष (गांव रामराय, जिला जींद के पास) एवं दक्षिण पूर्व में मचक्रुक यक्ष (गांव सींख, जिला पानीपत के पास) का स्पष्ट वर्णन मिलता है । जहां से चारों यक्षों की दूरी 24-24 कोस है। यहां से बर्बरीक ने महाभारत के युद्ध को देखा। इस स्थान पर वर्तमान समय में बबरूभान नाम से मन्दिर भी स्थापित है। पुराणों में वर्णित एक अन्य वृतान्त से इस स्थल को जोड़ा गया है। वामन पुराण तथा ब्रह्मणपुराण में किंचित परिवर्तन के साथ इस तीर्थ का नामोल्लेख तथा महत्त्व स्पष्ट वर्णित है।

"अस्ति ब्रह्मन्महातीर्थ चक्रतीर्थमिती श्रुतम ।
तत्र स्नानान्नरो भकत्या हरेर्लोकमवाप्नुयात् ।।"

(ब्रह्मपुराण, 86/1)

अर्थात् चकतीर्थ नामक एक परम प्रसिद्ध महातीर्थ है । उस तीर्थ में भक्तिपूर्वक स्नान करने से मनुष्य विष्णुलोक को प्राप्त करता है।[1]

सेरहदा ग्राम में उत्तर-पश्चिमी की तरफ चक्रतीर्थ (चक्रपाणि) स्थित है। इस तीर्थ का सम्बन्ध एक घटनाक्रम से जोड़ा जाता है। पौराणिक साहित्य के अंतर्गत विश्वधर नामक एक धनवान वैश्य का एक पुत्र था तथा उसकी युवावस्था में ही मृत्यु हो गई। पुत्र शोक के कारण, वणिक तथा उसकी धर्मपत्नी के अत्यधिक विलाप के कारण यम का हृदय द्रवित हो गया तथा वह अपना लोक छोड़कर विष्णु की आराधना करने लगा। यम के इस कार्य से पृथ्वी पर कोई भी मृत्यु न होने के कारण से वसुन्धरा आक्रान्त हो गई और वसुन्धरा ने इन्द्र के सम्मुख जाकर उन्हें यमराज को प्रजा के संहारकारी कार्य में प्रवृत्त करने को कहा । जब इन्द्र ने यमराज को बुलाने के लिए सिद्ध किन्नरों को यमपूरी में भेजा तो वहां पर यमराज को न पाकर वापिस खाली हाथ लौट आए तब इन्द्र ने यम के पिता सविता से पूछा तो उन्होंने यम के सूर्य की घोर तपस्या में लिप्त होने की बात बताई। तत्पश्चात् देवेन्द्र ने यम की तपस्या को भंग करने के लिए अप्सराओं को बुलाया लेकिन उन्होंने यम के तपोबल के भय के कारण ऐसा करने को तैयार न हुई, तब क्रोधवंश इन्द्र देव स्वयं देवताओं

[1]. 48 कोस कुरुक्षेत्र की परिक्रमा, के० डी० बी०

की सेना लेकर यम से युद्ध करने चल पड़ें । इन्द्र के इस कार्य को जानकर चक्रधारी भगवान विष्णु ने यम के रक्षार्थ अपने सुदर्शन चक्र को भेज दिया। जिस स्थान पर चक्र रक्षार्थ प्रकट हुआ, वहीं परमश्रेष्ठ चक्रतीर्थ के नाम से विख्यात हुआ। वामन पुराण में इसी तीर्थ को सचक्रक नाम से भी उल्लेखित किया गया है।

"रन्तुकस्याश्रमात्तावद् यावत्तीर्थ सचक्रकम् ।
ब्राह्मणैः परिपूर्ण तु दृष्ट्वा देवी सरस्वती ।
हितार्थ सर्वविप्राणां कृत्वा कुंजानि सा नदी ।
प्रयाता पश्चिमं मार्ग सर्वभूतहिते स्थिता ।।"

(वामन पुराण, 42/56)

इसमें बताया गया है कि सरस्वती ने जब देखा कि रन्तुक आश्रम से सचक्रक तक के सभी भू-भाग प्राणियों से भर गए तब प्राणियों के हितार्थ वह पश्चिमी वाहिनी हो गई ।[2]

वर्तमान समय में यहां पर पूर्व-पश्चिम अक्षीय एक मन्दिर स्थापित है जो उत्तर-मध्यकालीन शैली में बना है। इसके मण्डप से जुड़ी एक सराय भी बनाई गई है। वर्तमान में मन्दिर का बाहरी भाग समय के थपेड़ों को सहते हुए जीर्ण-शीर्ण अवस्था में हो गया है, जिसके कारण बाहरी भाग पर बने हुए भिति चित्र नष्ट हो चुके है। मन्दिर की उत्तर दिशा में सरोवर है जहां पर पुरुष और महिलाओं के लिए अलग-अलग स्नान की व्यवस्था की गई है।

निष्कर्ष :

प्राचीन काल से ही सेहरदा का धार्मिक व सांस्कृतिक दृष्टि से विशेष स्थान रहा है। प्राचीन साहित्य ग्रंथों में इस क्षेत्र की धार्मिक महत्ता की पुष्टि भी हो जाती है। इसलिए जब भी महाभारत सम्बंधि तीर्थ स्थलों का जिक्र होता है तो उसमें सेरहदा तीर्थ स्थल का अपना विशेष महत्त्व प्रदर्शित होता है। क्योंकि यही वो पुण्य स्थान है जहां पर विजय का वरदान प्राप्त बर्बरीक के शिश को धड़ से अलग कर यहां स्तम्भ पर रखा गया और उन्होंने महाभारत का युद्ध देखा । वर्तमान में भी इसी स्थान पर भबरूभान के नाम से मन्दिर भी स्थित है जिसके प्रति लोगों की अपार श्रद्धा है। महाभारत के घटनाक्रम रूपी पुस्तक में सेरहदा तथा बर्बरीक का अध्याय सबसे महत्त्वपूर्ण है ।

संदर्भ सूची

1. कैथल डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, 1991
2. यादव, के० सी०, हरियाणा का इतिहास, दिल्ली, 2012
3. देशवाल, सन्तराम, संस्कृति एवं कला, पंचकूला, 2005
4. नलवा, जसवन्त सिंह, ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में कुरुक्षेत्र, शाहबाद 2008
5. 48 कोस कुरुक्षेत्र की परिक्रमा, कुरुक्षेत्र विकास बोर्ड, कुरुक्षेत्र, 1999
6. यादव, अतुल, हरियाणा ऐतिहासिक धरोहर, हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकूला, 2007
7. फडके, एच० ए०, हरियाणा ऐनशेन्ट एण्ड मेडिवल, न्यू दिल्ली, हरमन पब्लिकेशन हाऊस, 1990
8. भार्गव, एम० एल०, दि ज्योग्राफी ऑफ ऋग्वैदिक इण्डिया, लखनऊ, 1968
9. कनिंघम एलेक्जेंडर, आर्कियलोजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया, एन्यूल रिर्पोट, कोरप्स इन्सक्रिप्सन इण्डीकेरम, वाराणसी, 1872

[2]. 48 कोस कुरुक्षेत्र की परिक्रमा, के० डी० बी०